MTTP–001

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद परियोजना
(एम.टी.टी.पी.-001)

(जनवरी 2019 और जुलाई 2019 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.जी.सी.बी.एच.टी.) को पूरा करने के लिए आपको चार–चार क्रेडिट के चार पाठ्यक्रम करने होंगे। इस स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम का चौथा पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.–001) 'अनुवाद परियोजना' का है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएँगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी पर्याय आपको पता नहीं हैं। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन–कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य–विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएँगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली–भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य–विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/मलयालम) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य–रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन–शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आवश्स्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच–प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बाद फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ–साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइडिंग कराके प्रस्तुत करें।

- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का उल्लेख होना चाहिए। इस तरह, आपकी 'अनुवाद परियोजना' का आरंभिक पृष्ठ इस प्रकार होगा :

कार्यक्रम का शीर्षक :	बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
पाठ्यक्रम कोड :	एम.टी.टी.पी.–001
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	अनुवाद परियोजना
अध्ययन केंद्र का नाम:	....
नामांकन संख्या :	....
नाम :	....
पता :	....
	....
हस्ताक्षर :	....
तिथि :	....

- अनुवाद परियोजना के साथ एक प्रमाण–पत्र भी लगाएँ जिसमें आपके अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित किया गया हो कि आपने यह अनुवाद–कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।

- अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से अथवा पंजीकृत डाक द्वारा भेजें :

  कुलसचिव
  विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

<u>अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि</u>

जनवरी 2019 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **31 मई, 2019**
जुलाई 2019 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2019**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यकम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

अनुवाद परियोजना

(एम.टी.टी.पी.-001)

1- निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10 × 8=80

(a)

রাজামশাই সিংহাসনে হেলান দিয়ে ফিক করে হেসে বললেন, 'কথাটা ঠিক বলেছ তো গুপ্তচর। আমার মাথায় আসেনি। গুপ্তচরের ধরা পড়াটাই তো শাস্তি। সে যখন নিজের দেশে ফিরে গিয়ে বলবে সবাই বেদম হাসবে। যাও তোমার ছুটি। আই কে আছিস, একে ভালো করে খাইয়ে ঘোড়ার পিঠে চাপিয়ে দেশের বাইরে পাঠিয়ে দে। দেখিস বিদেশি মানুষ যত্নআত্তির যেন ত্রুটি না হয়।'

এই ঘটনার পরই মন্ত্রীমশাই বুঝলেন অবস্থা ভয়ংকর হয়ে যাচ্ছে। রাজামশাই রাগতে ভুলে গেছেন। দেশের রাজা যদি রাগতে ভুলে যায় তার মতো বিপদ আর নেই। যে-কোনও দেশের জন্যই রাজার রাগ অতি প্রয়োজন। রাজার রাগে অপরাধীরা তটস্থ হয়ে থাকবে। যারা অপরাধী নয়, তারা ভয়ও পাবে। রাজার আসল গুণই হল রাগ। সেই রাগই নেই! এ তো মস্ত রোগ! যাকে বলে রাগ-রোগ। রাগ ফিরিয়ে দেওয়ার জন্য ওষুধ খোঁজা শুরু হয়েছে। রাজবদ্যিকে সবাই চেপে ধরেছেন।

দ্বিতীয় মিটিংডে রাজবদ্যি মাথা চুলকে মন্ত্রীমশাইকে বললেন, 'ওষুধ তৈরির ফর্মুলা জেনে গিয়েছি। কিন্তু কোন ওষুধটা বানাব সেটা বুঝতে পারছি না। নাশো সিরিজের বেশ ক'টা চিকিৎসা করতে পারব। কিন্তু রাজামশাইকে কোনটা দেব? শোকনাশো? না বুদ্ধিনাশো? নাকি ভেলকিনাশো?'

মন্ত্রীমশাই কিছু বলবার আগেই রাজপণ্ডিত বিরক্ত হয়ে বললেন, 'নাশো দিয়ে হবে না বদ্যি। নাশো তো বিনাশ। আমরা তো বিনাশ চাই না। তুমি ফিরিয়ে আনো সিরিজের ওষুধ খোঁজো বদ্যি। রাজামশাইয়ের রাগ ফিরিয়ে আনো।'

মন্ত্রীমশাই কপালে ভাঁজ ফেলে থমথমে গলায় বললেন, 'ঠিকই। রাজবদ্যি আপনি আর দেরি করবেন না। বেশি দেরি করলে সর্বনাশ হয়ে যাবে। রাজামশাইয়ের রাগ ফিরিয়ে আনতেই হবে। যে করেই হোক আনতে হবে। আপনি ওষুধ বানান, নইলে আপনার কপালে দুঃখ আছে। এত টাকা মাইনে দিয়ে রাজদরবারে তো আপনাকে এমনি রাখা হয়নি। আর মাত্র একটা দিন সময় পাবেন। যান এখনই প্রস্তুত হোন।'

মন্ত্রীমশাইয়ের হুমকি শুনে রাজবদ্যি খুব ঘাবড়ে গেলেন। তিনি তড়িঘড়ি বাড়ি গিয়ে 'ফিরিয়ে আনো' সিরিজের ওষুধের তালিকা খুলে বসলেন। তালিকায় অনেক কিছু ফিরিয়ে আনবার কথা আছে। খিদে, ঘুম, ফুর্তি, শান্তি। কিন্তু রাগ ফিরিয়ে আনবার কোনও কথা তো নেই। না থাক। যা খুশি একটা বানাতে হবে। নইলে নিজের প্রাণ নিয়ে টানাটানি হবে। মন্ত্রীমশাই ছেড়ে কথা বলবে না। রাজামশাইকে যে এখন মন্ত্রীর নালিশ করবেন সে উপায়ও নেই। নালিশ শুনে রাজামশাই হয়তো হাসতে হাসতে মন্ত্রীকে হাতের লেখা করবার শাস্তি দেবেন। তাই একটা ওষুধ চাই।

রাজবদ্যি তৈরি করতে বসলেন। ওষুধের নাম 'বৃহৎহরিদ্রাখণ্ড'। এই ওষুধ বানানোর ফর্মুলা হল—হরিদ্রাচূর্ণ আধসের, তেউড়িচূর্ণ চারিপল, হরতুকি চূর্ণ চারিপল, চিনি আড়াই সের। সঙ্গে দারুহরিদ্রা, মুথা, যমানি, বনযামিনী, চিতা, কণ্টকী, কৃষ্ণজীরা, পিপুল...।

(b)

তিনি পুকুরের দিকে তাকিয়ে ডাকাতদের উদ্দেশে গর্জন ছাড়লেন। 'এখনও বলছি, হারামজাদারা উঠে আয়। নইলে পরে যখন ধরব, পিটিয়ে বিলকুল লাশ বানিয়ে ছাড়ব।' বলেই আকাশের দিকে বন্দুকের মুখটা তুলে বারকয়েক ট্রিগার টিপলেন। সঙ্গে সঙ্গে আওয়াজ উঠল। বুম-বুম-বুম—

'কনস্টেবলরা যেন উৎসাহ পেয়ে গেল। বড়বাবুর দেখাদেখি তারাও বন্দুকে ঘোড়া টিপতে লাগল। সেই বুম বুম আওয়াজ।

আশপাশের ডালপালাওয়ালা গাছগুলোর মাথায় যে পাখিরা ঘুমোচ্ছিল, আচমকা গুলির শব্দে তাদের ঘুম ছুটে গেছে। দারুণ ভয় পেয়ে তারা রকমারি আওয়াজ করে ঝাঁকে ঝাঁকে গাছের মাথার ওপর উড়তে লাগল।

শহরের এদিকটা হল মশাদের খাসতালুক। এতগুলো মানুষ নাগালে পেয়ে তারা ঝাঁপিয়ে পড়েছে। শরীরের যে সব অংশ খোলা, যেমন গাল, গলা কপাল, হাত—সেগুলো তাদের টার্গেট।

পুকুরের এপার ওপার, ডান পাশ, বাঁ-পাশ থেকে চটাশ চটাশ আওয়াজ আসছে। মশা কামড়ালেই পাহারাদাররা চাপড় কষাচ্ছে। নানারকম আওয়াজ ভেসে আসছে—'উ' 'আ', 'জ্বালিয়ে ফেললে রে,' ইত্যাদি।

পুলিশের জবরদস্ত অফিসার হলেও বড় বাবুকে পর্যন্ত রেহাই দিচ্ছে না মশারা। এ এমন শত্রুপক্ষ যে গোলাগুলি চালিয়ে টিট করা যায় না। নিজের গালে কপালে অনবরত চড় কষাতে কষাতে মাঝে মাঝে দু-তিন লাফিয়ে উঠে চিক্কুর ছাড়ছেন, 'ওরে বাবারে, হুল ফুটিয়ে ফুটিয়ে একেবারে কাঁথা সেলাই করে ফেললে—' একটানা কামড় খাওয়ার ফাঁকে ফাঁকে তিনি অবশ্য বলছেন, 'কষ্ট হচ্ছে ঠিকই, তবে এ একরকম ভালোই হল। হয়তো আমরা সবাই ঘুমিয়ে পড়তাম। মশাগুলো ঘুমোতে দিল না। একবার চোখ বুজে এলে ডাকুগুলোর পোয়াবারো। ঠিক ভেগে যেত।'

বিল্টু, নান্টু আর লাটু বড়বাবুর কাছাকাছি দাঁড়িয়ে ছিল। তারাও মশার কামড়ে ঝালাপালা। ওরা জানে নন্দরা ধারে কাছেই আছে।

বিল্টু খুব নীচু গলায় ডাকল, 'নন্দদা—'

তার কাঁধে একটা কনকনে ঠান্ডা হাত এসে পড়ল। নন্দ ফিসফিস করে বলল, 'কী হল?'

'মশারা তো আমাদের ছিঁড়ে খাচ্ছে। তোমাদের কী হল?'

'আমরা দিব্বি আছি। তোদের মতো আমাদের কী রক্তমাংসের শরীর আছে? হুল ফোটাবে কোথায়?'

'তোমরা মাইরি ফার্স্ট কেলাস আছ। এদিকে আমরা কামড়ে সাবাড় হতে চলেছি। সকাল অব্দি আমরা টিকব না। এখানেই লাশ হয়ে পড়ে থাকব।'

'মশারা কি বাঘ? বাঘের কামড়ে মানুষ মরে। মশার কামড়ে জ্বালা জ্বালা করে, তবে মানুষ মরে না।'

বিল্টুর একটু রাগই হল। তারা অতিষ্ঠ হয়ে উঠেছে। আর নন্দ কিনা বকর বকর করে চলেছে। সে উত্তর দিল না। বরফের মতো ঠান্ডা হাতটা বিল্টুর কাঁধেই রয়েছে। একটু চাপ দিয়ে নন্দ বলল, 'সেই কথাটা জানিস?'

(c)

অলিম্পিকের সময় এলেই পদক জয়ী রেকর্ড গড়া মহাতারকাদের মহান কীর্তির কথা বারবার উঠে আসে। 'দ্য গ্রেটেস্ট শো অন দ্য আর্থ'-এ পদক জয় করাই পাখির চোখ থাকে সমস্ত প্রতিযোগীর। ক্রীড়া দুনিয়ায় জয়ীকেই মানুষ মনে রাখে, পরাজিতকে ভুলে যায়। তবে উলটোটাও কিছু ক্ষেত্রে হয় বই কী। খেলার মাঠে বেশ কিছু পরাজিত ক্রীড়াবিদ আছেন যাদের মানুষ আজও মনে রেখেছে। অথচ ভুলে গেছে বিজয়ীকে।

১৯০৮-এর লন্ডন অলিম্পিক। ব্রিটিশ রাজপরিবারের অনুরোধে সেবার ম্যারাথন দৌড় শুরু হয়েছিল উইন্ডসর ক্যাসেল থেকে। শেষ হয়েছিল অলিম্পিক স্টেডিয়ামে। শোনা যায় রাজপরিবারের ছেলেমেয়েরা এই ঐতিহাসিক দৌড় দেখতে ভীষণ উৎসাহী ছিলেন। তাই এমন আয়োজন।

দৌড় শুরু হতে দেখা গেল আগে চলেছেন তিন ব্রিটিশ দৌড়বিদ। চার মাইল অতিক্রান্ত হওয়ার পর দেখা গেল ওদের কাছাকাছি চলে এসেছেন দক্ষিণ আফ্রিকার হেফেরন। তাঁর পেছনেই বেঁটে-খাটো ডোরান্ডো পিয়েত্রি। দম ফুরিয়ে যাওয়ায় মাটিতে লুটিয়ে পড়ল এক ইংরেজ। কিন্তু অপর দুই ব্রিটিশ অ্যাথলিট প্রাণপণে দৌড়োচ্ছেন। পনেরো মাইল পর্যন্ত দৌড়ে দুজনেই বসে পড়েন। সবার আগে এবার হেফেরন। তার ঠিক পেছনেই ইতালিয়ান কাপ্তির মিঠাইওয়ালা ডোরান্ডো পিয়েত্রি।

পদক জয়ের স্বপ্নে ঊর্ধ্বশ্বাসে দৌড়োচ্ছেন দুই দৌড়বিদ। ২৫ মাইল পথ শেষ। বাকি আর এক মাইল। দূরে দেখা যাচ্ছে অলিম্পিক স্টেডিয়াম। ডোরান্ডো টপকে গেলেন হেফেরনকে। উপস্থিত বিপুল জনতা পিয়েত্রির সমর্থনে জয়ধ্বনি দিতে শুরু করেছেন। কিন্তু একি করলেন পিয়েত্রি? প্রচণ্ড ক্লান্তিতে মানুষটি যেন চোখে কিছুই আর দেখতে পাচ্ছেন না। মাথাটা ভীষণ ঝিমঝিম করছে। মতিভ্রম হয়ে গেল ডোরান্ডোর। সকলকে অবাক করে উলটোদিকে দৌড়োতে লাগলেন তিনি। খানিকটা গিয়ে সর্বশক্তি হারিয়ে মাটিতে ঢলে পড়লেন। ওদিকে ততক্ষণে তিন মার্কিন অ্যাথলিট স্টেডিয়ামের কাছাকাছি চলে এসেছেন। জনি হেজ, ওয়াল্টেন ও জো ফোর্বস আগে আগে দৌড়োচ্ছেন। অসহায় পিয়েত্রিকে সাহায্য করতে এগিয়ে যান কয়েকজন কর্তব্যরত ব্যক্তি ও ডাক্তার। ওখানেই ঘটে গেল চরমতম ভুল।

অলিম্পিকের আসরে কোনও প্রতিযোগীকে সামান্যতম সাহায্য করলেই সে প্রতিযোগিতায় বাতিল বলে গণ্য হয়। সাহায্যকারীরা ডোরান্ডোকে হাত ধরে তুলে দাঁড় করিয়ে মুখটা ঘুরিয়ে সামনের দিকে করে দিলেন। টলতে টলতেই ডোরান্ডো আবার ছুটতে শুরু করলেন। অন্যদের পেছনে ফেলে প্রথমে থাকা জনি হেজকে প্রায় ধরে ফেলেছেন। কিন্তু আর পারলেন না। সমাপ্তির একেবারে মুখে হেজ টপকে যান ডোরান্ডোকে। আধ মিনিটের মধ্যে ডোরান্ডোও সমাপ্তি সীমার সামান্য আগে দৌড় শেষ করেন। তারপর আর দাঁড়াতে পারেননি। প্রচণ্ড ক্লান্তিতে মাটির কোলে ঢলে পড়লেন ইতালিয় অ্যাথলিট। কয়েকজন মানুষ পিয়েত্রির অজ্ঞান দেহটা ঠেলেঠুলে সমাপ্তি সীমা পার করিয়ে দেয়।

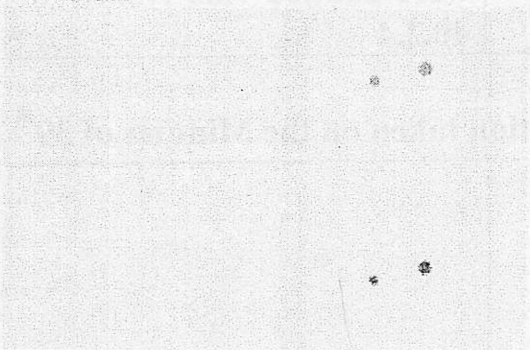

(d)

গত বছর দার্জিলিং বেড়াতে গিয়ে ঘোড়া নিয়ে বিশ্রী একটা কেলেঙ্কারি হয়েছিল বটে! রাস্তায় ধস নামায় শুভদের বেশ দেরিই হয়েছিল দার্জিলিং পৌঁছতে। হোটেলের ঘরে মালপত্র রেখে খাওয়াদাওয়া সেরে উঠতে না-উঠতেই বিকেল নেমে এসেছিল চুপিসারে। পাহাড়ের বিকেল বড্ড ক্ষণস্থায়ী। কুয়াশার চাদর জড়িয়ে কখন যে ঝুপ করে সন্ধে নেমে আসবে বলা মুশকিল। শুভদের হোটেল থেকে ম্যাল পাঁচ মিনিটের হাঁটা পথ। প্রথমদিনে বুড়িছোঁয়ার মতো ম্যাল দর্শনটা অন্তত যাতে সেরে ফেলা যায় সেইজন্য দাদুর তাড়নায় শুভরা সবাই মিলে গিয়ে হাজির হয়েছিল ম্যালে। হালকা কুয়াশার আস্তরণে মোড়া স্বপ্নের ম্যাল। পর্যটকরা বিন্দাস মুডে ইতিউতি ঘুরে বেড়াচ্ছে। কেউ আবার লম্বা কাঠের বেঞ্চগুলোয় বসে সৌন্দর্য উপভোগ করছে। দাদুও সেই রকম একটা বেঞ্চ খুঁজে নিয়ে তাতে বসার উদ্যোগ নিতেই বিচিত্রমামা হামলে পড়ল। আবদারের সুরে বলে উঠল, "টাকা দাও বাবা, ঘোড়ায় চড়ব।"

মামার কথায় কটমট করে তার মুখের দিকে তাকালেন দাদু, "দিঘার কেসটায় তোর যে শিক্ষা হয়নি, সেটা বেশ বুঝতে পারছি! আমরা এখানে দিনচারেক থাকব। ঘোড়া তো আর পালিয়ে যাচ্ছে না। তেমন হলে কাল এসে একসময় চড়িস না হয়।"

কিন্তু মামাকে যেন ঘোড়ায় পেয়েছে। তক্ষুনি না চড়া পর্যন্ত তার শান্তি নেই। তাই গলাটাকে করুণ করে বলল, "ঘোড়াগুলো কাল নাও তো থাকতে পারে। ধরো, একসঙ্গে সবক'টার যদি শরীর খারাপ হয়? কিংবা কোনও অনুষ্ঠানে সব ক'টাকে যদি একসঙ্গে নিয়ে যাওয়া হয়?"

(e)

আর এই পারফরম্যান্সের জোরে আই সি সি র‍্যাঙ্কিংয়ে বোলারদের তালিকায় আবার এক নম্বরে উঠে এলেন তিনি।

উপমহাদেশের আর-এক স্পিনার পাকিস্তানের ইয়াসির শাহ লর্ডস টেস্টে দশ উইকেট নিয়ে এক নম্বরে উঠে এসেছিলেন। সম্প্রতি তাঁকে সরিয়ে আবার এক নম্বরে অশ্বিন। দেশের মাটিতে ভারতীয় স্পিনারদের দাপট নিয়ে কখনও কোনও প্রশ্ন ছিল না। কিন্তু বিদেশের পিচে সেই স্পিনারদের পারফরম্যান্স কেমন যেন হারিয়ে যায়। আবহাওয়া, পিচ তার একটা কারণ। অশ্বিনও তার ব্যতিক্রম ছিলেন না। অস্ট্রেলিয়া, শ্রীলঙ্কা, ইংল্যান্ড, ওয়েস্ট ইন্ডিজ সফরে গিয়ে সেভাবে সফল হতে পারেননি তিনি। কিন্তু এই দলগুলোর বিরুদ্ধেই ভারতের মাটিতে দুর্ধর্ষ পারফরম্যান্স তাঁর। কিন্তু এবারে ওয়েস্ট ইন্ডিজ সফরের প্রথম থেকেই ভারতীয় স্পিনাররা যেন অন্য কোনও জাদুকাঠির ছোঁয়ায় জেগে উঠেছে। অশ্বিন তো বটেই, অমিত মিশ্র, রবীন্দ্র জাদেজা এই তিনজনকেই সিরিজে অনেক বেশি আগ্রাসী এবং ভয়ঙ্কর লাগছে। এর পিছনে নিশ্চিতভাবেই ভারতের নতুন কোচ অনিল কুম্বলের একটা বড় অবদান রয়েছে।

কেরিয়ারের শুরুতে তামিলনাড়ুর হয়ে অলরাউন্ডার হিসেবেই অশ্বিন দলে ডাক পেতেন। কিন্তু আন্তর্জাতিক মঞ্চে বোলার হিসেবেই তাঁর খ্যাতি। এখন ধীরে-ধীরে ব্যাটসম্যান হিসেবেও নিজেকে তুলে ধরছেন তিনি। ২০১১ সালে দিল্লিতে ওয়েস্ট ইন্ডিজের বিরুদ্ধে প্রথম টেস্ট দলে ডাক পান অশ্বিন। তারপর থেকে তিনিই ভারতের সবচেয়ে সফল বোলার। ভারতীয় বোলারদের মধ্যে টেস্ট ক্রিকেটে সবচেয়ে দ্রুত ৫০, ১০০ এবং ১৫০টি উইকেটের মাইলফলক ছুঁয়েছেন তিনি। এই অমিল বি-টেক ইঞ্জিনিয়ারকে এখনই ভারতীয় দলের সহ-অধিনায়ক করার দাবি উঠছে। তবে সবে ৩৩টি টেস্ট ম্যাচ খেলেছেন অশ্বিন। এখনও অনেক পথ চলতে হবে তাঁকে। অনেক মাইল ফলক পেরোতে হবে তাঁকে।

(f)

কালীঘাট মেট্রো স্টেশনের সিঁড়ি দিয়ে নামতে নামতেই শব্দটা শুনতে পেল বৃষ্টি। ন'টা চৌত্রিশের ট্রেন প্ল্যাটফর্মে ঢুকে গেছে। বৃষ্টি একটু অসহায় বোধ করল। আজ সে অন্য দিনের মত তাড়াহুড়ো করে নামতে পারবে না। শাড়িতে সে কোন সময়ই খুব স্বচ্ছন্দ নয়। স্কার্ট ব্লাউজ, সালোয়ার কামিজ বা প্যান্ট শার্টই তার নিত্য দিনের পোশাক। আজ সে ইচ্ছে করেই শাড়ি পরেছে। আজকে সে অন্য দিনের থেকে নিজেকে পৃথক করে রাখবেই।

আজ খুব সকালে ঘুম ভেঙে গিয়েছিল বৃষ্টির। মধ্য হেমন্তের ভোরে তখনও ঘর জুড়ে ছড়িয়ে ছিল আগের রাতটা। দিন আসার আগে রাত শেষবারের মত ছুঁয়ে ছুঁয়ে দেখে নিচ্ছিল সব কিছু। ভোরের দিকে এ সময় বেশ হিম হিম ভাব। এখনও যদিও সেভাবে জাঁকিয়ে ঠাণ্ডা পড়েনি, আসি আসি করেও শীত রোজ দোমনা হয়ে একটু করে এগোচ্ছে পিছোচ্ছে তবু সে যে আসছে সেটা স্পষ্ট টের পাওয়া যায়। এ সময় ভোরের পৃথিবী সম্পূর্ণ নিস্তব্ধ থাকে। এ সময় পৃথিবীতে সব কিছুই বড় পবিত্র। এরকমই একটা সময়ে বাইরে পাঁচিলের গায়ে একটা ছোট্ট পাখি পিকপিক ডেকে উঠেছিল। সেই ডাকেই চমকে বিছানায় উঠে বসেছিল বৃষ্টি। ঘুমের শেষ রেশটুকু কাটার সঙ্গে সঙ্গে মনে পড়ে গিয়েছিল কথাটা। মুহূর্তেই শরীর জুড়ে অচেনা শিহরন, আশ্চর্য অনুভূতি।

... শী উইল বি ইন দা কাস্টডি অফ হার মাদার টিল শী অ্যাটেইনস হার এজ অফ এইট্টিন.....

যত দিন না বৃষ্টির আঠেরো বছর বয়স হয় ততদিন সে মায়ের হেপাজতে থাকবে। যত দিন না বয়স আঠেরো বছর হয়। যতদিন না..... তারপর ? আঠেরো বছর বয়স হলে ?

ওই শব্দ কটা এখনও বৃষ্টির মনের ভেতর ঘুরপাক খেয়ে চলেছে। কেউ যেন ধাক্কা দিয়ে বার বার মনে পড়িয়ে দিচ্ছে কথাটা। আজকেই। তবে কি কথাটার বিশেষ কোন উদ্দেশ্য আছে ! নইলে অত ভোরে আজ ঘুমই বা ভাঙবে কেন ? জীবনে খুব কম দিনই এত সকালে ঘুম থেকে উঠেছে বৃষ্টি।

(g)

জয়া জুনিপার গাছের টবের দিকে এগিয়ে গেল। গোড়ার মাটি শক্ত জমাট বেঁধে গেছে। ছোট্ট একটা লোহার শিক তুলে জয়া গাছটার গোড়া খোঁচাতে শুরু করল। বাবার ওপরও টান কি তবে কমে যাচ্ছে বৃষ্টির? অথচ এই মেয়েই কী ছটফটই না করত বাবার জন্যে! কোর্টের রায়ে সপ্তাহে একদিন মেয়েকে নিজের কাছে নিয়ে যাওয়ার অধিকার পেয়েছিল সুবীর। একদিনই। রবিবার এলেই মেয়েও সকাল থেকে সেজেগুজে তৈরি। গাড়ির হর্ন শুনলেই ছুটে বেরিয়ে যেত বাইরে,

—বাবা এসেছে। আমার বাবা এসে গেছে।

জয়া কী যে কাঁটা হয়ে থাকত সেই সব দিনগুলোতে! যদি বৃষ্টি আর না ফেরে? যদি বাবার কাছেই থেকে যায়? সুবীর আবার বিয়ে করার পর অনেকটা নিশ্চিন্ত বোধ করেছিল।

মেয়ে বাথরুম থেকে বেরোতেই জয়া প্রশ্ন করল,

—তোর জন্মদিনে এবারও বন্ধুরা কেউ আসবে না সন্ধেবেলা?

বৃষ্টি নিষ্পলক তাকাল জয়ার দিকে। যেন জরিপ করছে মাকে,

—শুনলেই তো সন্ধেবেলা থাকব না।

জয়া অপ্রস্তুত। মেয়েও তবে এতক্ষণ তাকে লক্ষ করছিল! কথা ঘোরানোর চেষ্টা করল,

—তোর জন্য কাল একটা ফিরহন্ কিনে এনেছি। দেখেছিস?

—দেখিনি। দেখে নেব।

বৃষ্টি ঘরে ঢুকে গেল।

মেয়ের গলায় পরিষ্কার ঝাঁঝ। মাঝে মাঝে এভাবেই মুখিয়ে ওঠে আজকাল। ভালভাবে কথাই বলতে চায় না।

নিখিল বলে, —ও কিছু না। এ বয়সে ওরকম একটু আধটু হয়। মা বাবার কথা শুনতে ভাল লাগে না, মনোমত সব কিছু না পেলে বিরক্তি আসে। নিজের কথাই ভেবে দ্যাখ্ না, ওই বয়সে বাবা মা'র কথা শুনে চলতে তোর ভাল লাগত?

(h)

আর-জন্মে গ্রামে ছিলাম, আসছে ছবি ঝাপসা হয়ে,
মাঠ-জঙ্গল ছিল অঢেল, পাশেই নদী যাচ্ছে বয়ে।
সেই নদীটির নাম 'বংশী', 'বংশাই' তা লোকের মুখে,
ঝাঁপিয়ে দাপাদাপি করে চান করেছি নদীর বুকে।
জিনিসভর্তি নৌকো আসত নানা রঙের পাল সাজিয়ে,
পানসি যেত আলতো ভেসে, কেউ বা কলের গান বাজিয়ে।
ঢাকার মোটর-লঞ্চ একটি আসত-যেত বাজিয়ে বাঁশি—
ডাকত যেন আমাদেরই, আমরা যেন দৌড়ে আসি।
নৌকাতে হাল ধরে মাঝি গাইত উদাস ভাটিয়ালি—
সেই নদীটির ছবি এখন মনে আমার ভাসছে খালি।
তার পাশে পাঠশালা ছিল, পড়তে পড়তে নদীর দিকে
মন চলে যায়, স্লেটের লেখা মুছে ফেলি আবার লিখে।

ওপারে হাট, চালার সারি, নিঝুম থাকে আর-দিনে সে,
হাটের দিনে দুদিক থেকে সারি সারি নৌকো এসে
ছেয়ে ফেলে নদীর সীমা, বেচাকেনার সব কোলাহল
জল ডিঙিয়ে পাঠশালাতে পৌঁছে আমায় করত পাগল।
সমস্ত দিন কেটে যেত হাঁকাহাঁকি, হট্টগোলে।
সন্ধে হতে শূন্য সে হাট, নিঝুম ঘুমে পড়ত ঢলে।

বাড়ির সামনে অনন্ত মাঠ, খেতের সঙ্গে খেত জুড়েছে,
মাঝখানে তার মাটির রাস্তা দূরের গ্রামে মিলিয়ে গেছে।
তার ওপরে বর্ষা যখন আসত রে ভাই মেঘ উড়িয়ে,
আকাশ ঢেকে, বাজ ফেলে, আর হাড়ভেজানো বৃষ্টি নিয়ে-
সে ছিল এক মহা-উৎসব, ঝড়ের মধ্যে দেতাম ছুটে,
স্নান করেছি বৃষ্টিতে আর ঝড়ের মধ্যে লুটেপুটে।
সেই ঝড়, সেই বৃষ্টি বুঝি জীবন থেকে মুছেই গেছে,
আমতলাতে আম কুড়োনো—সেই স্মৃতিও পার হয়েছে।
বর্ষা ছিল মজার, তাতে কই মাছেরা পথের ওপর
মিছিল করে উঠে আসত, সবাই বলত, 'আমাকে ধর্'।
আমাদের আর পায় কে, আমরা তুলে নিতাম সব টপাটপ,
ক-দিন ধরে রান্নাঘরে চলত ভোজে কই-উৎসব।

(i)

—'তুমি শ্বেতলানা ভাওয়াল নও!...নও মাম্মা তুমি আমার!...হু আর ইউ?'

যখন আমাদের দীর্ঘদিনের বিশ্বাস, দীর্ঘদিনের জানা সত্যিগুলো একেবারে মিথ্যে হয়ে যায় তখন হঠাৎ আমরা প্রতিবাদী হয়ে উঠি আর বড় নিরাপত্তাহীনতায়ও ভুগি। বিকেনের অবস্থাও ঠিক তাই হয়েছিল। কারণ, সামনের টুলে বসে থাকা এই প্রাণী—যে ধবধবে সাদা, যার গোটা দেহটা পাটকাঠির মতোই প্রায় রোগা বংশপরম্পরায় মাস্‌ল অ্যাট্রফির কারণে, পায়ের গঠন ঠিক সেই কাদামাটিতে দেখা পায়ের ছাপের মতোই....সবচেয়ে বড় কথা যে কিনা এই পৃথিবীরই জীব নয়—তাকেই এতদিন সে মা বলে মেনে এসেছে।

'প্লিজ, চুপ করে থেকো না তো! বলো তো সত্যিটা কী? তুমিই মেরেছ না বাবাকে? কেনই বা আমার মা হওয়ার চেষ্টা করছ? এই পৃথিবীতেই বা পা রাখলে কেন, বলো?' বিকেনের গলায় উত্তেজনা, চোখ ছলছল।

'আমি কাউকে মারিনি, বিলিভ মি, তোমার বাবা কখনো ছিলেনই না। ও তো একটা অ্যাডভান্সড্‌ কম্পিউটার গ্রাফিক্স-এ বানানো ছবি দেওয়ালে টাঙানো।'—প্রাণীটা তার অধিক ব্যবহারের কারণে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত সেরিব্রাল কর্টেক্স-বিশিষ্ট মাথাটা নীচু করে ছল্‌ছল্‌ চোখে ভরাট গলায় বলল—'আজকের পরে যদি আমাকে এই পৃথিবী ছেড়ে চলে যেতে হয়, তবুও তুমি হবে আমার জীবনের সবথেকে বড় পাওনা (কষ্টের হাসি)... আসলে, আমি তো পৃথিবীর বাসিন্দাই ছিলাম আগেও; হলই না হয় সেটা ৩০১৬ সালের পৃথিবী....হলামই বা আমি এখনকার মানুষের পরবর্তী উন্নত প্রজন্ম 'হোমো প্রোগ্রেসিস্‌'...

ছোটবেলা থেকেই আমার ধারণা ছিল, যদি আমি সবাইকে ভালোবাসা দিতে পারি, সবার পাশে থাকতে পারি, তবে আমিও সময়ে নিজের পাশে সবাইকে পাব। কিন্তু এই মুক্তমনাভাবটাই আমাকে সবকিছু হারাতে বাধ্য করেছে। ওই পৃথিবীতে আমার আর আমার হাজব্যান্ডের দিন খুব খারাপ কাটছিল না। ঠিক তোমারই বয়সি এক ছেলেও ছিল আমাদের। ম্যালিগন্যান্ট সেল ধ্বংসকারী একটা উপকারী অঙ্কোলাইটিক ভাইরাস-এর ওপর রিসার্চ করছিলাম আমরা। আমি, আমার হাজব্যান্ড এবং যেহেতু আমাদের মস্তিষ্ক উন্নততর, তাই পনেরোতেই রিসার্চস্কলার হওয়া আমার ছেলে—এই তিনজন মিলে। রিসার্চের পাশাপাশি ওদের জন্য খাবার বানানো, কারো শরীর খারাপ হলে রাত জেগে তার দেখভাল করা — কোনোটাতেই এতটুকু খামতি রাখিনি।

স্বপ্ন ছিল, এই ছোট্ট ফ্যামিলিটায় যেটুকু সমস্যা-অশান্তি ছিল, সব সরিয়ে ফ্যামিলিটাকে গুছিয়ে ফেলতে পারব। কিন্তু সাফল্য আমার কপালে নেই। হাজব্যান্ড আর ছেলে—মাত্র দুজনেরই নাম রইল রিসার্চ পেপারে, ক্যান্সারের প্রতিষেধক আবিষ্কারের ক্রেডিটে। আমার নাম থাকলই না, উপরন্তু ওরা আমাকে পুরোপুরি উপেক্ষা করে গেল; আমাকে ছেড়েই চলে গেল ওরা অ্যাওয়ার্ড নিতে। ভীষণ মানসিক আঘাত পেয়েছিলাম। না রিসার্চের সম্মান পেলাম, না অর্ধাঙ্গিনী—মা-র। উন্নত হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে জগৎটা যেন অনেক বেশি স্বার্থান্বেষী, যান্ত্রিক হয়ে পড়েছিল।

রাগে-দুঃখে ঠিক করেই নিই, এই পৃথিবী ছেড়ে চলে যাব। মহাকাশের ওয়ার্মহোলের মধ্য দিয়ে প্যারালাল ডায়মেনশানে যাত্রা আমাদের কাছে নতুন নয়। চলে আসি এই সমান্তরাল বিশ্বে, যেখানে তখনও ২০০১ সাল চলছে। এই পৃথিবীতে ল্যান্ড করবার সময় আমার ভয়জার (শিপ্‌) যথেষ্ট ক্ষতিগ্রস্থ হয়েছিল। 'মেটামেটেরিয়াল ক্লোকিং' অন্‌ করে সেটাকে অদৃশ্য করে রেখে, আমি কালো কাপড় মুড়ি দিয়ে চারপাশটা ঘুরে দেখে বোঝবার চেষ্টা করি।

2- निम्नलिखित का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 10 × 2=20

(क)

अकेलापन घिनौना होता है। इसमें उदासी का हल्का सा घेरा होता है, आकर्षित कर पाने या रुचि जगा पाने की अपर्याप्तता होती है इसमें। कई बार आदमी इसकी वज़ह से थोड़ा शर्मिंदा भी होता है। लेकिन कुछ हद तक अकेलापन हर आदमी के लिए थीम की तरह होता है। अलबत्ता, मेरा अकेलापन कुंठित करने वाला था क्योंकि मैं दोस्ती करने की सारी ज़रूरतें पूरी करता था। मैं युवा था, अमीर था और बड़ी हस्ती था। इसके बावज़ूद मैं न्यू यार्क में अकेला और परेशान हाल घूम रहा था। मुझे याद है मैं अंग्रेज़ी संगीत जगत की कॉमेडी स्टार, खूबसूरत जोसी कॉलिन्स से उस वक्त अचानक ही मिल गया था जब वह फिफ्थ एवेन्यू पर चली जा रही थी।

"ओह," उसने सहानुभूति पूर्ण तरीके से कहा,"आप अकेले क्या कर रहे हैं?"

मुझे ऐसा लगा मानो मुझे कुछ प्यारा सा अपराध करते हुए पकड लिया गया हो। मैं मुस्कुराया और बोला,"मैं तो बस, ज़रा दोस्तों के साथ लंच करने के लिए जा रहा था," लेकिन काश, मैंने उससे सच कह दिया होता कि मैं तन्हा हूं और उसे लंच पर ले जाना मुझे अच्छा लगता, सिर्फ मेरे संकोच ने ही मुझे ऐसा करने से रोका।

उसी दोपहर को मैं मैट्रोपॉलिटन ओपेरा हाउस के पास ही चहल कदमी कर रहा था कि मैं डेविड बेलास्को के दामाद मॉरिस गेस्ट से जा टकराया। मैं मॉरिस से लॉस एंजेल्स में मिल चुका था। उसने अपने कैरियर की शुरुआत टिकट ब्लैकी के रूप में की थी। ये धंधा उस वक्त बहुत फल फूल रहा था जब मैं पहली बार न्यू यार्क आया था। (टिकट ब्लैकी वह आदमी होता है जो थियेटर में सबसे अच्छी सीटें पहले खरीद कर रख लेता है और बाद में थियेटर के बाहर खड़ा हो कर फायदे में बेचता है।) मॉरिस ने थियेटर के धंधे में आशातीत सफलता हासिल की थी। इसका सर्वोच्च बिन्दु था उसके द्वारा बनायी गयी द मिरैकल जिसका निर्देशन मैक्स रेनहार्ट ने किया था।

मॉरिस स्लाविक था। चेहरा उसका पीला, और बड़ी बड़ी कंचे जैसी आंखें, बड़ा सा मुंह, और मोटे होंठ। वह ऑस्कर वाइल्ड का भद्दा संस्करण नज़र आता था। वह बहुत ही भावुक किस्म का आदमी था जो जब बोलता था तो ऐसा लगता था मानो आपको धमका रहा हो।

(ख)

'अज्ञेय' (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) के तो वह शुरू से निकट, और उनके आत्मीय थे। वही उनको 'दिनमान' में लाए थे। धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय श्रीकांत वर्मा, विजयदेव नारायण साही, लक्ष्मीकांत वर्मा, कुँवर नारायण आदि के साथ उन्होंने बहुतेरा समय बिताया था। फणीश्वरनाथ 'रेणु' जैसे कलाकार से गरमाहट भरी मुलाकातें थीं। मनोहर श्याम जोशी जैसे विलक्षण रचनाकार 'दिनमान' में, उनसे रोज बतियाते थे। बाद की पीढ़ियों में कवि कमलेश, मलयज, जैसे कई रचनाकार उनके स्नेह भाजन थे। और इन पंक्तियों के लेखक को भी प्रचुर मात्रा में उनका प्रेम, स्नेह, मिला था। साठ सत्तर के दशक में, जब-जब 'दिनमान' का दफ्तर 10, दरियागंज, दिल्ली में रहा, सर्वेश्वर जी, और मैं, शाम को वहाँ से सीधे मंडी हाउस आते थे। पैदल। रास्ते भर तब कोई न कोई मिलता भी जाता - कोई पत्रकार, लेखक, सामाजिक - राजनीतिक कार्यकर्ता, रंगकर्मी, पाठक- वे रुककर सबसे दो-चार मिनट बितियाते थे। उसका हालचाल पूछते थे। कुल मिलाकर यह कि कोई तीन दशकों तक दिल्ली में, उसके सांस्कृतिक जगत में, सर्वेश्वर जी की उपस्थिति बड़ी मूल्यवान थी। वह सबको सुलभ थे। और मंडी हाउस के चौराहे में, काफी हाउस में (कभी-कभार) कनाट प्लेस में उन्हें लोगों से धिरा हुआ देखा जा सकता था। वह यात्राएँ कम करते थे। पर, उनकी 'मंडली' बड़ी थी। विभिन्न प्रदेशों में फैली थी। राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश से जो भी लेखक-कवि-पत्रकार-सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता दिल्ली आता था वह जिनसे मिलने की इच्छा रखता था, उस सूची में सर्वेश्वर जी का नाम अवश्य होता था। नंदकिशोर आचार्य जैसे तब के युवा रचनाकार उनसे मिलने आते थे। इस सबकी याद है। अपने समय के चर्चित रंगकर्मी राजेश विवेक, जिन्होंने बाद में फिल्मों में भी नाम कमाया, ('लगान' में उनके उल्लेखनीय काम की याद आती है)- भी सर्वेश्वर जी के प्रिय भाजन थे। मंडी हाउस में जिधर सर्वेश्वर जी जाते वह भी उनके साथ हो लेते थे। और लेखक-चित्रकार-सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता चंचल (जो अब अपने पुरखों के गाँव में बस गए हैं) वह भी तो सर्वेश्वर जी के एक विशिष्ट सहयोगी थे। हमारे रंगकर्मी साहित्य प्रेमी मित्र, देवेंद्रराज अंकुर (भूतपूर्व निदेशक, राष्ट्रीय नाट्य वियालय) को भी सर्वेश्वर जी के साथ मंडी हाउस में समय बिताने की, और कभी-कभार दरियागंज से मंडी हाउस तक पैदल आने की याद है। ये सारी चीजें तो मैं एक साँस में, एक ही बैठकी में, याद करता चला गया हूँ। नहीं तो सर्वेश्वर जी के

कामकाज की, उनसे मिलने-जुलने-बतियाने और सलाह माँगने वालों की सूची और भी लंबी है। और जिन कलाकारों-रचनाकारों से वे जुड़े, उनके लिए कभी न कभी, कुछ लिखा, किया। पलटकर रचनाकारों ने भी उनको किसी न किसी रूप में समादृत किया। मसलन, जे. स्वामीनाथन की धूमिमल गैलरी में आयोजित एक प्रदर्शनी में उन्होंने कविता-पाठ किया, अन्य कवियों के साथ। स्वामीनाथन ने उनसे प्रदर्शनी का उद्घाटन कराया। कैटलॉग में उनकी कविताएँ प्रकाशित की। हिम्मत शाह ने सर्वेश्वर जी के कविता संग्रह 'खूँटियों पर टँगे लोग' के आवरण के लिए अपनी शिल्पकृति का एक चित्र दिया। और यह संग्रह सर्वेश्वर जी ने 'चित्रकार मित्र ज. स्वामीनाथन को' समर्पित किया। इसी संग्रह के कई पृष्ठों में चित्रकार उमेश वर्मा के किए हुए रेखांकन प्रकाशित हैं। ब.व. कारंथ निर्देशित, गिरीश करनाड लिखित, नाटक, 'हयवदन' के लिए उन्होंने गीत लिखे। कुमुदिनी लाखिया और स्वप्न सुंदरी ने अपनी कुछ प्रस्तुतियों में उनकी रचनाओं का प्रयोग किया है। साठ-सत्तर की दशक की दिल्ली में चित्रकारों और रंगकर्मियों की आत्मीय बैठकों में उन्हें कविता पाठ करते हुए देखा-सुना जा सकता था। एक कविता पाठ तो उनकी कविता 'तेंदुआ' को सुनने के लिए विशेष रूप से आयोजित हुआ था, जिसमें तैयब मेहता, जैसे चित्रकार भी उपस्थित थे।